श्रीः

श्रीमते निगमान्तमहादेशिकाय नमः

श्रीमान् वेङ्कटनाथार्यः कवितार्किककेसरी।
वेदान्ताचार्यवर्यो मे सन्निधत्तां सदा हृदि॥

श्री वेङ्कटेशकवि विरचितं

# ॥ श्रीमद्वेदान्तदेशिकगद्यम् ॥

*This document* has been prepared by*

***Sunder Kidambi***

*with the blessings of*

श्री रङ्गरामानुज महादेशिकन्

**His Holiness *śrīmad āṇḍavan* of *śrīraṅgam***

*This was typeset using LaTeX and the **skt** font. Our sincere thanks to श्री उ.वे. अनन्त नरसिंहाचार्य स्वमि of श्रीरङ्गम् for proofreading and helpful suggestions in the preparation of this text.

श्रीः

श्रीमते निगमान्तमहादेशिकाय नमः

# ॥ श्रीमद्वेदान्तदेशिकगद्यम् ॥

श्रीमान् वेङ्कटनाथार्यः कवितार्किककेसरी।
वेदान्ताचार्यवर्यो मे सन्निधत्तां सदा हृदि॥

जयत्यखिल दुर्वादि तिमिरौघ दिवाकरः।
श्रित तापप्रशमनः त्रय्यन्तार्य सुधाकरः॥

जय जय महादेशिक

विश्वालङ्कार विश्वामित्र पवित्रगोत्र कलशोदधि कौस्तुभ

विबुध वैरि वरूथिनी वित्रासि वेङ्कटेश विमल घण्टावतार

अनन्तसदृशानन्त गुणाकर

अनन्त गुरु नन्दन

शोभन चरित

सुलोचनोत्तम तोतारम्बालोचन चन्द्र

बहुमुखतोषित पुण्डरीकाक्ष

पुण्डरीकाक्षसूरि पुण्य फलभूत

वत्सकुल तिलक वरदाचार्य वीक्षित

ब्रह्मवित्प्रवर अनन्तार्य विहित ब्रह्मोपदेश

वादिहंसवलाहक मातुल रामानुजाचार्य सकाश लब्ध सकल
वेदवेदाङ्ग तर्क मीमांसा शब्द वेदान्त शास्त्र जात

विंशत्यब्दे विश्रुत नानाविध विद्य

www.prapatti.com

स्वपादाम्बुजध्यान सुप्रसन्नतर हयमुख मुख विनिसृत लाला
सुधा पान लब्ध सार्वज्ञ्य

ज्ञानभक्ति वैराग्य वात्सल्य सौशील्य औदार्य चातुर्य
माधुर्य स्थैर्य धैर्य कारुण्य क्षमादि अनेक कल्याण गुण
भूषण

शुभकुल प्रसूत तुल्यगुण लक्षण प्रेयसी सह चरित सकल सद्धर्म

हयवदन देवनायक अच्युत गोपाल रघुवीर रणपुङ्गव वरद
नरहरि यथोक्तकारि दीपप्रकाश देहळीश वेङ्कटेश रङ्गेश
किङ्ग्रहेश पक्षीश हेतीश यतीश रमा क्षमा गोदा स्तोत्र
सुधा रञ्जित सहृदय विबुधजन हृदय

परदेवता पारमार्थ्य वेदि वसिष्ठ पराशर व्यास
प्राचेतस हरित प्रभृति परम ऋषि समधिक वैभव

साङ्ख्य सौगत चार्वाक शाङ्कर यादव भास्कर कणाद
कौमारिल मत तमोनिवारण दिवाकर

पाषाण्डद्रुमषण्डखण्डन चण्डपवन

श्रीवेङ्कटाचल वारणाचल गोपनगर अहीन्द्रनगर श्रीमुष्ण
चित्रकूट श्रीरङ्ग श्रीवनाद्रि कुरुकापुरी प्रभृत्यष्टोत्तरशत
दिव्यस्थान सेवा सन्तोष भरित पदविन्यास पवित्रीकृत पृथिवीमण्डल

यतिपति यामुनार्य नाथमुनि फणिति परिष्कार पाञ्चरात्ररक्षा
रहस्यरक्षा निक्षेपरक्षा सच्चरित्ररक्षा गीतार्थसङ्ग्रहरक्षा
शतदूषणी सर्वार्थ सिद्धि तत्वटीका तात्पर्यचन्द्रिका
न्यायपरिशुद्धि न्यायसिद्धाञ्जन अधिकरणदर्पण
अधिकरणसारावळि सङ्कल्पसूर्योदय यादवाभ्युदयाद्यनेक
दिव्यप्रबन्ध निर्माण सामर्थ्य सन्दर्शन सन्तुष्ट श्रीरङ्गनाथ
दिव्याज्ञालब्ध वेदान्ताचार्य पद

तद्वल्लभा कृपा संप्राप्त सर्वतन्त्र स्वतन्त्रता बिरुद

सन्दर्शन मात्र निरस्त समस्त दुर्वादिसङ्घ

त्रिंशद्वारं श्रावित शारीरक मीमांसा भाष्य

छात्रजन निबद्ध जैत्रध्वज प्रसाधित दशदिशा सौध

एक यामिनी याम निर्मित पादुका सहस्र श्रवण सञ्जात
विस्मय रङ्गेशय विश्राणित कवितार्किकसिंह समाख्या विख्यात वैदग्ध्य

संसार दावानलसन्तप्त जन सञ्जीवन सरसामृत
परीवाहरूप सारसार रहस्यत्रयसार अभय प्रदानसार
गुरुपरंपरासार सार सङ्क्षेप सारसङ्ग्रह उपकार
सङ्ग्रह विरोधपरिहार प्रधान शतक परमपदसोपान
तत्वपदवी रहस्य पदवी तत्वनवनीत रहस्य नवनीत
तत्वमातृका रहस्य मातृका तत्व सन्देश रहस्य
सन्देश हंस सन्देश रहस्य सन्देश विवरण रहस्य
शिखामणि तत्वत्रय चुलकं रहस्यत्रय चुलकं मुनिवाहन भोग
अञ्जलि वैभव संप्रदाय परिशुद्धि हस्तिगिरिमाहात्म्य
परमत भङ्ग तत्वरत्नावळी तत्वरत्नावळी प्रतिपाद्य सङ्ग्रह
रहस्य रत्नावळी रहस्य रत्नावळी हृदय रञ्जित रमासहाय
नित्यबहुमत

पाञ्चरात्र प्रति पादित अभिगमन उपादान इज्या स्वाध्याय
योगरूप पञ्चकाल परायण

सम्यक् प्रदर्शित षडङ्ग अष्टाङ्ग योग

पराङ्कुश परकाल भक्तिसार कुलशेखर विष्णुचित्त मुनिवाहनादि
मुनिवररचित दिव्य प्रबन्धतात्पर्य रञ्जित परितोषित बुध जन

त्रिरत्नगाधा श्री वैष्णव दिनचरि अर्थपञ्चक सङ्ग्रह श्री चिह्नमाला गीतार्थसङ्ग्रहगाधा शरणागति सङ्ग्रहगाधा द्वादशनामगाधा मूलमन्त्रगाधा द्वय गाथा चरमश्लोक सङ्ग्रहगाधा परिहारगाधा नवरत्नमाला प्रबन्धसाराद्यनेक दिव्यप्रबन्ध निर्माण सामर्थ्य सन्तुष्ट वरप्रसाद लब्ध वरगुण भूषित वरदाचार्य सत्पुत्र

सापराध लक्ष्मणार्य दुर्वर्ण सुवर्ण करण प्रकटित अघटितघटनासामर्थ्य

ब्रह्मतन्त्र स्वतन्त्रयोगि प्रभाकरयोगि वरदाचार्य रामानुजाचार्य प्रभृति सच्छिष्योपदिष्ट त्रय्यन्त युगळ सारसारादि सद्रहस्य जात

सुदर्शन सुरि विरचित श्रुत प्रकाशिका परिरक्षण परिशोधित प्रतिपादन परिबृढ यतिपति विरचित

यादवाचलवासि नारयण चरणाम्बुज सेवा समय सन्तुष्टमानस

स्वनिर्मितातिशयितानन्त दिव्यप्रबन्ध प्रवर्तन सरभसनीत शत संवत्सर

सरसिजसदृश चरणयुगळ

सितान्तरीय शोभमान कटितट

दिव्याङ्गुलीयक व्याख्यामुद्रा मुद्रित दिव्य पुस्तक भूषण भूषित करद्वय

विमलोपवीत सूत्तरीय तुलसी नळिनाक्षमाला विराजित विशालवक्षःस्थल

लसदूर्ध्वपुण्ड्रमण्डित पूर्णेन्दु समवदन

दिनकर सन्निभ दिव्यमङ्गळ विग्रहोज्वल

सितान्तरीय सुत्तरीय दिव्यमकुट चूडावतंस मकरकुण्डल
ग्रैवेयक हार केयूर कटक दामोदरबन्धन काञ्चीगुण नूपुरादि
अपरिमेय भूषणभूषित

श्रीरङ्गनाथ पदकमल निरन्तरानुभव निरतिशयानन्द परिपूर्ण मनोरथ

विशुद्ध विद्याभूषण विबुधजन नाथ

वेङ्कटनाथ

मम नाथ

नमस्ते नमस्ते नमः

नमः पद्माक्षपौत्राय नमोऽनन्तार्यसूनवे।
नमो वरदनाथाय वेदान्ताचार्यसूरये॥

निर्मितं वेङ्कटेशेन वेदान्ताचार्य वैभवम्।
सङ्कीर्तयेत् प्रतिदिनं वेदान्ताचार्य भक्तिमान्॥

श्रीमते भगवते तूप्पुल् निगमान्तमहादेशिकाय नमः॥

॥ इति श्रीमद्वेदान्तदेशिकगद्यं सम्पूर्णम्॥